वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 380
ISBN-978-93-82071-61-7

श्री संभवनाथ विधान

–रचयित्री –

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी,
दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के 80वें जन्मजयंती वर्ष-सन् 2013-2014 (अमृत महोत्सव) के अन्तर्गत जैन शासन के वर्तमानकालीन तृतीय तीर्थंकर भगवान संभवनाथ के जन्मकल्याणक (कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा) के अवसर पर प्रकाशित)

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org, www.encyclopediaofjainism.com
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com Facebook : jaintirthjambudweep

COURTESY—JAIN BOOK DEPOT
C/o Shri Nabhi Kumar Manav Kumar Jain
C-4, Opp. PVR Plaza, Cannaught Place, New Delhi-1
Ph.-011-23416101-02-03/Website : www.jainbookdepot.com

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2540	मूल्य
1100 प्रतियाँ	कार्तिक शु. पूर्णिमा, 17 नवम्बर 2013	20/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादक:–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–स्वस्तिश्री पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी

प्रवचनसार ग्रंथ में आचार्य श्री कुन्दकुन्द ने कहा है कि–

जीव के शुभ, अशुभ परिणाम ही उसे तदनुरूप फल प्रदान करते हैं। अशुभोपयोग से यह जीव तिर्यंच, नारकी और कुमानुष होकर सहस्रों दुःखों को सहन करता हुआ संसार में परिभ्रमण करता रहता है और धर्म से परिणत होकर शुभोपयोग से स्वर्गसुख और शुद्धोपयोग से निर्वाण पद प्राप्त कर लेता है।

जीव के जब जन्म-जन्मान्तर का पुण्य संचित होकर एक साथ उदय में आता है तो जिनधर्म एवं जिनवाणी सुनने का साधन प्राप्त होता है जिससे शुभोपयोग में जीव का समय व्यतीत होता है अन्यथा तो सभी संसारी प्राणी दिन रात अशुभोपयोग अर्थात् पाप क्रियाओं में संक्लेशित रहकर अपार कष्ट का अनुभव करते रहते हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि अशुभोपयोग से बचने के लिए प्रत्येक श्रावक को भगवान की भक्ति, पूजा, स्तोत्र पाठ, तीर्थयात्रा आदि करना चाहिए जो शुभोपयोग के अंग हैं। श्री कुन्दकुन्दाचार्य के अनुसार श्रावक के लिए दान और पूजन दोनों आवश्यक कर्त्तव्य हैं, जिसमें पूजा के अन्तर्गत नित्य पूजाओं के अतिरिक्त नैमित्तिक पूजाओं में अनेकानेक मण्डल विधानादि की पूजाएँ की जाती हैं।

वर्तमान समय में परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने सर्वप्रथम बालब्रह्मचारिणी के रूप में दीक्षा लेकर साहित्य लेखन का अनुपमेय कार्य किया, जिसको युगों-युगों तक विस्मृत नहीं किया जा सकता है। उनके द्वारा लिखित अनेकों वृहद् एवं लघु विधानों की अनुगूंज आज भारत के कोने-कोने में है और भक्तगण उसके द्वारा भगवान की भक्ति में तल्लीन होकर अपार पुण्य का संचय कर लेते हैं। उसी क्रम में उनकी यह सारभूत एवं नूतन कृति "श्री संभवनाथ विधान" है जिसमें भगवान संभवनाथ का गुणानुवाद किया गया है। इस विधान के माध्यम से भक्तगण प्रभु भक्ति का दिव्य स्रोत प्रवाहित कर कर्मनिर्जरा करते हुए पुण्य का बंध करें और अपने मनोरथों को सफल करें, यही शुभेच्छा है।

प्रस्तावना

–ब्र. कु. इन्दु जैन (संघस्थ)

जैनशासन में अनादिकाल से अनन्तानन्त चौबीस तीर्थंकर होते आए हैं और आगे भी होते रहेंगे। इन अनंतानंत तीर्थंकरों की शाश्वत जन्मभूमि अयोध्या एवं शाश्वत निर्वाणभूमि सम्मेदशिखर है परन्तु अनेकों अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी काल के व्यतीत हो जाने पर एक हुण्डावसर्पिणी काल आता है जिसमें अघटित घटनाएँ होती हैं, ऐसा जिनागम में वर्णन है।

वर्तमान में उसी हुण्डावसर्पिणी काल के प्रभाववश वर्तमान चौबीसी के मात्र पाँच तीर्थंकर ही शाश्वत जन्मभूमि अयोध्या में जन्मे और शेष तीर्थंकरों के जन्म अन्य 15 स्थानों पर हुए, जिसमें से तीसरे तीर्थंकर भगवान संभवनाथ ने उत्तरप्रदेश की श्रावस्ती नगरी में महाराजा दृढ़राज की महारानी सुषेणा देवी से कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा की पावन तिथि में जन्म लिया और चैत्र शुक्ला षष्ठी को सम्मेदशिखर जी सिद्धक्षेत्र से निर्वाणधाम को प्राप्त हुए।

उन तीर्थंकर भगवन्तों के दर्शन आज पंचमकाल में हमें सुलभ नहींहैं किन्तु उनकी अगाध भक्ति-उपासना करके हम उन तीर्थंकरों का गुणानुवाद आज भी कर सकते हैं और अपनी कर्मशृँखला को काटकर मुक्तिपथ की ओर अग्रसर हो सकते हैं। हम पुण्यशाली हैं कि उन तीर्थंकर भगवन्तों की पूजा-विधान द्वारा भक्ति करने का सुन्दर माध्यम हमें परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने प्रदान किया है। बीसवीं शताब्दी में साक्षात् सरस्वती की अवतार पूज्य माताजी ने अपने अनूठे व्यक्तित्वऔर कृतित्व से सम्पूर्ण जगत् को आश्चर्यचकित कर दिया है। तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमि के विकास-जीर्णोद्धार आदि महानतम कार्यों के साथ-साथ साहित्य के क्षेत्र में ऐतिहासिक कीर्तिमान स्थापित करते हुए उन्होने जैनागम के चतुरनुयोगों पर उच्चकोटि के 300 ग्रंथों का लेखन किया है और भक्तिमार्ग के क्षेत्र में अनेक सुन्दर विधानों की रचनाकर जैन जगत पर महान उपकार किया है। उसी शृँखला में उनकी यह नूतन कृति "श्री संभवनाथ विधान" है, जिसके माध्यम से हम भगवान संभवनाथ की आराधना कर पुण्य संचय के साथ-साथ सहजतापूर्वक उनके जीवनदर्शन से परिचित हो सकते हैं।

इस विधान में सर्वप्रथम श्री संभवनाथ स्तोत्र है पुनः संभवनाथ भगवान की पूजाएवं उनके गुणों के 108 और 1 पूर्णार्घ्य है पूजन के अंत में अत्यन्त सुन्दर जयमाला, पुनः बड़ी जयमाला है जिसके माध्यम से हम सोलहकारण भावना की महिमा का परिज्ञान कर नवलब्धि आदि के बारे में भी समझ सकते हैं। यह अतिशयकारी विधान प्रत्येक करने-कराने वालों के मनोरथ की सिद्धि में निमित्तभूत बने यही वीरप्रभू से मंगलप्रार्थना है।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान–टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि–आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति–अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र**–गोयल, **नाम**–कु. मैना

माता-पिता–श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत–ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा–चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम-क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा–वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व–अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 300 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि–सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा–हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा-भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ, सम्मेदशिखर में आचार्य श्री शांतिसागर धाम इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा–पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।

शैक्षणिक प्रेरणा–'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, ऑनलाइन जैन इनसाइक्लोपीडिया आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा–जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

–कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् 1974 से हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं-

1. सन् 1972 से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के अन्तर्गत प्रतिवर्ष लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं।

2. सन् 1974 से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।

3. सन् 1974 से 1985 तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।

4. सन् 1974 से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है- कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद मंदिर, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना, तीन लोक रचना, नवग्रहशांति जिनमंदिर, चौबीस तीर्थंकर मंदिर एवं श्री शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग प्रतिमाओं की स्थापना ।

5. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग 15000 ग्रंथ संग्रहीत हैं।

6. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये करोड़ों णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।

7. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन किये जाते हैं।

8. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।

9. यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक सुविधायुक्त डीलक्स फ्लैट्स वाली कई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।

10. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी तथा मनोरंजन हेतु मिनी ट्रेन, झूले आदि हैं।

11. तीर्थंकर जन्मभूमियों की वंदना एवं धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन करने वाले थियेटर से समन्वित गणिनी ज्ञानमती हीरक जयंती एक्सप्रेस।

12. गणिनी ज्ञानमती दिगम्बर जैन पत्राचार परीक्षा केन्द्र का संचालन।

13. इंटरनेट पर जैनधर्म के इन्साइक्लोपीडिया (www.encyclopediaofjainism. com) का निर्माण।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तक आने के लिए दिन भर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य नंद्यावर्त महल तीर्थ, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ तथा महावीर जी अतिशय क्षेत्र के महावीर धाम परिसर में निर्मित पंचबालयति दिगम्बर जैन मंदिर का संचालन होता है। वर्तमान में इस संस्थान के अन्तर्गत सम्मेदशिखर जीतीर्थ पर ''आचार्य श्री शांतिसागर धाम'' का निर्माण प्रारंभ किया जा रहा है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य रचनाओं के दर्शन हेतु हस्तिनापुर पधारकर आध्यात्मिक एवं भौतिक सुख की प्राप्ति करें।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के शिरोमणि संरक्षक

1. श्रीमती निर्मला जैन ध.प. स्व. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, रोशनावली, दिल्ली-6।
2. श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।
3. श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी-19, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।
4. श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।
5. श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।
6. श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।
7. श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
8. डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
9. श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.
10. श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली
11. श्री बी.डी. मदनाइक, मुम्बई
12. श्री धनकुमार जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
13. श्री जितेन्द्र कुमार जैन एवं श्रीमती सुनीता जैन कोटड़िया, फ्लोरिडा, यू.एस.ए.
14. श्रीमती विमला देवी जैन ध.प. श्री ओमप्रकाश जैन, स्वालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।
15. श्री अमित जैन एवं संभव जैन सुपुत्र श्रीमती अनीता जैन ध.प. श्री मूलचंद जैन पाटनी, दिसपुर (कामरूप) आसाम।
16. श्रीमती अजित कुमारी जैन ध.प. श्री महेन्द्र कुमार जैन, ओबेदुल्लागंज (रायसेन) म.प्र.।
17. श्री नाभिकुमार जैन, जैन बुक डिपो, सी-4, पी.वी.आर. प्लाजा के पीछे, कॉनॉट प्लेस, नई दिल्ली।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के परम संरक्षक

1. श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
2. डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, 792 विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
3. श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।
4. श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।
5. स्व. श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
6. श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।
7. श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
8. श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
9. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) , गांधीनगर, दिल्ली।
10. श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।
11. स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन , तोपखाना बाजार, मेरठ।
12. श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।
13. श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।
14. श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
15. श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-7।
16. श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।
17. श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली
18. श्री आशु जैन, कालका जी, नई दिल्ली
19. श्री प्रद्युम्न कुमार जैन छोटी सा., श्री अमरचंद जैन सर्राफ, लखनऊ (उ.प्र.)
20. श्रीमती शशि जैन ध.प. श्री दिनेशचंद जैन, शिवालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।
21. श्रीमती आदर्श जैन ध.प. स्व. श्री अनन्तवीर्य जैन के सुपुत्र श्री मनोज कुमार जैन, मेरठ।
22. श्रीमती आरती जैन ध.प. श्री प्रकाशचंद जैन 'शीशे वाले', इलाहाबाद (उ.प्र.)।

मण्डल का नक्शा

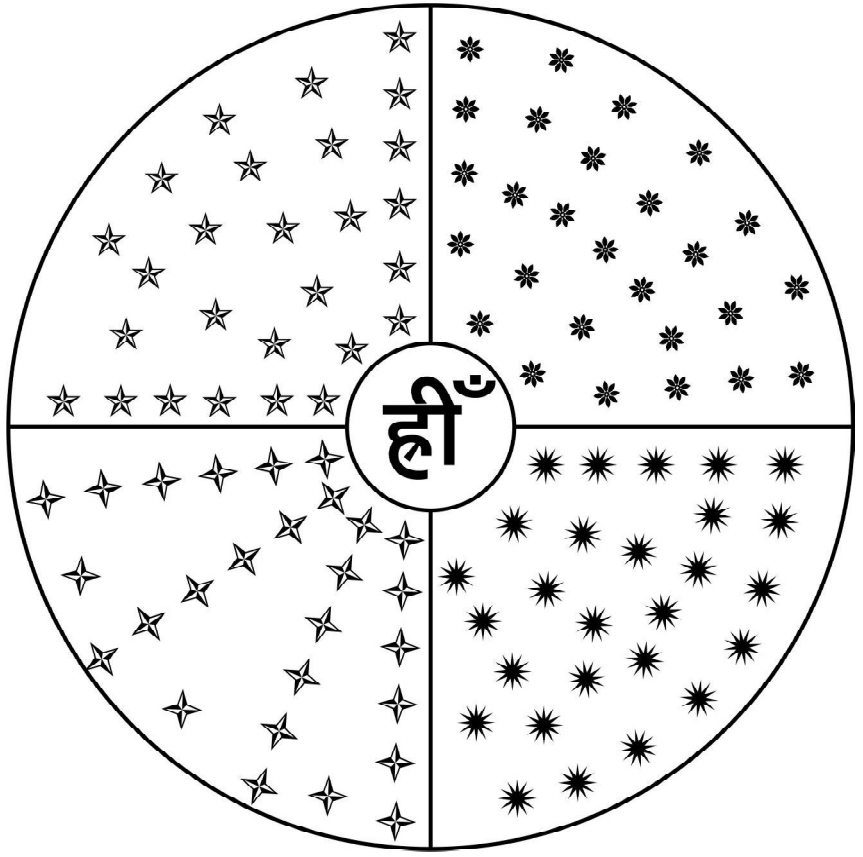

प्रथम कोष्ठक में	-27 अर्घ्य
द्वितीय कोष्ठक में	-27 अर्घ्य
तृतीय कोष्ठक में	-27 अर्घ्य
चतुर्थ कोष्ठक में	-27 अर्घ्य
कुल	-108 अर्घ्य, 1 पूर्णार्घ्य, 2 जयमाला अर्घ्य

श्री संभवनाथ विधान

मंगलाचरण

-उपजाति छंद-

पुनातु मे संभवनाथ! चित्तं, पुनः पुनः संसृतिदुःखतप्तम्।
संस्तौमि नित्यं शरणं प्रपद्ये, भवाम्बुधेः पारगतं महेशम्।।1।।

श्री संभवनाथ स्तोत्र

-शंभु छंद-

हे मोहध्वांत हर ज्योतिरूप, भास्कर भवहर संभव स्वामी।
तव चरण सरोरुह को प्रणमूँ, धर्मेश्वर तीर्थेश्वर नामी।।
त्रैलोक्य अलोकाकाश सहित, सब तुमने अवलोकित कीना।
हे आप्त जिनेश्वर सब जग को, त्रैकालिक भी युगपत् जाना।।1।।

भगवन्। तव चरण कमल युग हैं, शुभदायक शरणभूत नामी।
हे संभव! भुवि पर भविजन को, शम् कीजे तुम्हें नमूँ स्वामी।।
श्रावस्ती में दृढ़राज पिता, औ मात सुषेणा धन्य हुए।
फाल्गुन शुक्ला अष्टमि तिथि थी, प्रभु मात गर्भ अवतीर्ण हुए।।2।।

कार्तिक पूर्णा में जन्म लिया, यश ज्योत्स्ना त्रिभुवन व्यापी।
हे नाथ! आपके वचनों की, सौरभता भी त्रिभुवन व्यापी।।

सोलह सौ हाथ तनू ऊँचा, आयू थी साठ लाख पूरब।
जन्मे तब से दश अतिशययुत, प्रभु को नमते सुर मस्तकनत।।3।।

जिनरूप धरा मगशिर पूर्णा में, कीर्ति चाँदनी फैल रही।
कार्तिक वदि चौथ तिथी के दिन, कैवल्यश्री से भेंट हुई।।
जब चैत्र सुदी षष्ठी आई, शिवकन्या ने वरमाल लिया।
कनकाभतनू भी अतनु हुए, फिर भी ग्रीवा में डाल दिया।।4।।

सम्मेदगिरी पर शिवलक्ष्मी ने, वरण किया शिवधाम मिला।
जग अश्वचिन्ह से है जाने, सब भव्यों का मन कमल खिला।।
भुवि शांति हेतु भव हानि हेतु, सुख वृद्धि हेतु संभव जिन हो।
मुझ भाक्तिकजन के सर्वसिद्धि, के हेतु सदा संभव जिन हो।।5।।

अथ जिनयज्ञप्रतिज्ञापनाय मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अर्हन्त पूजा

-स्थापना-गीता छन्द-

अरिहंत प्रभु ने घातिया को, घात निज सुख पा लिया।
छ्यालीस गुण के नाथ अठरह, दोष का सब क्षय किया।।
शत इन्द्र नित पूजें उन्हें, गणधर मुनी वंदन करें।
हम भी प्रभो! तुम अर्चना, के हेतु अभिनंदन करें।।1।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्री अर्हत्परमेष्ठि समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्री अर्हत्परमेष्ठि समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ स्थापनं।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्री अर्हत्परमेष्ठि समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टकं-स्रग्विणी छंद

साधु के चित्त सम स्वच्छ जल ले लिया।
कर्ममल क्षालने तीन धारा किया।।
सर्व अरिहंत को पूजहूँ भक्ति से।
कर्म अरि को हनूँ भक्ति की युक्ति से।।1।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं अर्हत्परमेष्ठिभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गंध सौगंध्य से नाथ को पूजते।
सर्व संताप से भव्यजन छूटते।।
सर्व अरिहंत को पूजहूँ भक्ति से।
कर्म अरि को हनूँ भक्ति की युक्ति से।।2।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं अर्हत्परमेष्ठिभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धौत अक्षत लिये स्वर्ण के थाल में।
पुंज धर के जजूं नाय के भाल मैं।।

सर्व अरिहंत को पूजहूँ भक्ति से।
कर्म अरि को हनूँ भक्ति की युक्ति से।।3।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

केतकी कुंद मचकुंद बेला लिये।
कामहर नाथ के पाद अर्पण किये।।
सर्व अरिहंत को पूजहूँ भक्ति से।
कर्म अरि को हनूँ भक्ति की युक्ति से।।4।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं अर्हत्परमेष्ठिभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मुद्ग मोदक इमरती भरे थाल में।
आत्म सुख हेतु मैं अर्पिहूँ हाल में।।
सर्व अरिहंत को पूजहूँ भक्ति से।
कर्म अरि को हनूँ भक्ति की युक्ति से।।5।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं अर्हत्परमेष्ठिभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ण के दीप में ज्योति कर्पूर की।
नाथ पद पूजते मोह तम चूरती।।
सर्व अरिहंत को पूजहूँ भक्ति से।
कर्म अरि को हनूँ भक्ति की युक्ति से।।6।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं अर्हत्परमेष्ठिभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप को अग्नि में खेवते शीघ्र ही।
कर्म शत्रू जलें सौख्य हो शीघ्र ही।।
सर्व अरिहंत को पूजहूँ भक्ति से।
कर्म अरि को हनूँ भक्ति की युक्ति से।।7।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सेव अँगूर दाड़िम अनन्नास ले।
मोक्ष फल हेतु जिन पाद पूजूँ भले।।
सर्व अरिहंत को पूजहूँ भक्ति से।
कर्म अरि को हनूँ भक्ति की युक्ति से।।8।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं अर्हत्परमेष्ठिभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य लेकर जजूँ नाथ को आज मैं।
स्वात्म संपत्ति का पाऊँ साम्राज मैं।।
सर्व अरिहंत को पूजहूँ भक्ति से।
कर्म अरि को हनूँ भक्ति की युक्ति से।।9।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं अर्हत्परमेष्ठिभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-दोहा-

जिन पद में धारा करूँ, चउसंघ शांती हेत।
शांती धारा जगत में, आत्यन्तिक सुख देत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंपक हर सिंगार बहु, पुष्प सुगंधित सार।
पुष्पांजलि से पूजते, होवे सौख्य अपार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र-**ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं अर्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।**

जयमाला

–दोहा–

श्री अरिहंत जिनेन्द्र का, धरूँ हृदय में ध्यान।
गाऊँ गुणमणिमालिका, हरूँ सकल अपध्यान।।1।।

–शम्भु छंद–

जय जय प्रभु तीर्थंकर जिनवर, तुम समवरण में राज रहे।
जय जय अर्हत् लक्ष्मी पाकर, निज आत्मा में ही आप रहे।।

जन्मत ही दश अतिशय होते, तन में न पसेव न मल आदी।
पयसम सित रुधिर सु समचतुष्क, संस्थान संहनन है आदी।।2।।

अतिशय सुरूप, सुरभित तनु हैं, शुभ लक्षण सहस आठ सौ हैं।
अतुलित बल प्रियहित वचन प्रभो, ये दश अतिशय जन मन मोहें।।
केवल रवि प्रगटित होते ही, दश अतिशय अद्भुत ही मानों।
चारों दिश इक-इक योजन तक, सुभिक्ष रहे यह सरधानो।।3।।

हो गगन गमन, नहिं प्राणीवध, नहिं भोजन नहिं उपसर्ग तुम्हें।
चउमुख दीखें सब विद्यापति, नहिं छाया नहिं टिमकार तुम्हें।।
नहिं नख औ केश बढ़े प्रभु के, ये दश अतिशय सुखकारी हैं।
सुरकृत चौदह अतिशय मनहर, जो भव्यों को हितकारी हैं।।4।।

सर्वार्ध मागधीया भाषा, सब प्राणी मैत्री भाव धरें।
सब ऋतु के फल औ फूल खिलें, दर्पणवत् भूरत्नाभ धरें।।
अनुकूल सुगंधित पवन चले, सब जन मन परमानंद भरें।
रजकंटक विरहित भूमि स्वच्छ, गंधोदक वृष्टी देव करें।।5।।

प्रभु पद तल कमल खिलें सुन्दर, शाली आदिक बहु धान्य फलें।
निर्मल आकाश दिशा निर्मल, सुरगण मिल जय जयकार करें।।
अरिहंत देव का श्रीविहार, वर धर्मचक्र चलता आगे।
वसुमंगल द्रव्य रहें आगे, यह विभव मिला जग के त्यागे।।6।।

तरुवर अशोक सुरपुष्प वृष्टि, दिव्यध्वनि, चौंसठ चमर कहें।
सिंहासन भामंडल सुरकृत, दुंदुभि छत्रत्रय शोभ रहें।।
ये प्रातिहार्य हैं आठ कहे, औ दर्शन ज्ञान सौख्य वीरज।
ये चार अनंत चतुष्टय हैं, सब मिलकर छ्यालिस गुण कीरत।।7।।

क्षुध तृषा जन्म मरणादि दोष, अठदश विरहित निर्दोष हुए।
चऊ घाति घात नवलब्धि पाय, सर्वज्ञ प्रभु सुखपोष हुए।।
द्वादशगण के भवि असंख्यात, तुम धुनि सुन हर्षित होते हैं।
सम्यक्त्व सलिल को पाकर के, भव भव के कलिमल धोते हैं।।8।।

मैं भी भवदुःख से घबड़ा कर, अब आप शरण में आया हूँ।
सम्यक्त्व रतन नहिं लुट जावे, बस यही प्रार्थना लाया हूँ।।
संयम की हो पूर्ती भगवन्! औ मरण समाधी पूर्वक हो।
हो केवल 'ज्ञानमती' सिद्धी, जो सर्व गुणों की पूरक हो।।9।।

–दोहा–

मोह अरी को हन हुए, त्रिभुवन पूजा योग्य।
नमो नमो अरिहंत को, पाऊँ सौख्य मनोज्ञ।।10।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं अर्हत्परमेष्ठिभ्यः जयमाला महार्घ्यं....।

शांतये शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

-गीता छंद-

जो भव्य श्री अरिहंत की, नित भक्ति से अर्चा करें।
वे भवभ्रमण को दूर कर, सम्यक् गती प्राप्ती करें।।
पंचमगती को प्राप्त कर, लोकाग्र पर निज में रमें।
सज्ज्ञानमति आर्हन्त्य सुख आनन्त्यगुणमय परिणमें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

भगवान श्री संभवनाथ तीर्थंकर पूजा

–अथ स्थापना –अडिल्ल छंद –

संभवनाथ तृतीय जिनेश्वर ख्यात हैं।
भववारिधि से तारण तरण जिहाज हैं।।
भक्तिभाव से करूँ यहाँ प्रभु थापना।
पूजूँ श्रद्धाधार करूँ हित आपना।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसंभवनाथतीर्थंकर! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसंभवनाथतीर्थंकर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसंभवनाथतीर्थंकर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक –स्रग्विणी छंद –

कर्ममल धोय के आप निर्मल भये।
नीर ले आप पदकंज पूजत भये।।
तीर्थकरतार संभव प्रभू को जजूँ।
कर्मनिर्मूल कर स्वात्म अमृत चखूँ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीतिस्वाहा।

मोहसंताप हर आप शीतल भये।
गंध से पूजते सर्व संकट गये।।
तीर्थकरतार संभव प्रभू को जजूँ।
कर्मनिर्मूल कर स्वात्म अमृत चखूँ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ अक्षयसुखों की निधी आप हो।
शालि के पुंज धर पूर्ण सुख प्राप्त हो।।
तीर्थकरतार संभव प्रभू को जजूँ।
कर्मनिर्मूल कर स्वात्म अमृत चखूँ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

काम को जीतकर आप शंकर बने।
पुष्प से पूजकर हम शिवंकर बने।।
तीर्थकरतार संभव प्रभू को जजूँ।
कर्मनिर्मूल कर स्वात्म अमृत चखूँ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

भूख तृष्णादि बाधा विजेता तुम्हीं।
मिष्ट पक्वान्न से पूज व्याधी हनी।।
तीर्थकरतार संभव प्रभू को जजूँ।
कर्मनिर्मूल कर स्वात्म अमृत चखूँ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोष अज्ञानहर पूर्ण ज्योती धरें।
दीप से पूजते ज्ञान ज्योती भरें।।
तीर्थकरतार संभव प्रभू को जजूँ।
कर्मनिर्मूल कर स्वात्म अमृत चखूँ।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्लध्यानाग्नि से कर्मभस्मी किये।
धूप से पूजते स्वात्म शुद्धी किये।।
तीर्थकरतार संभव प्रभू को जजूँ।
कर्मनिर्मूल कर स्वात्म अमृत चखूँ।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्ण कृतकृत्य हो नाथ! इस लोक में।
मैं सदा पूजहूँ श्रेष्ठ फल से तुम्हें।।
तीर्थकरतार संभव प्रभू को जजूँ।
कर्मनिर्मूल कर स्वात्म अमृत चखूँ।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वसंपत्ति-धर नाथ! अनमोल हो।
अर्घ्य से पूजते स्वात्म कल्लोल हो।।

तीर्थकरतार संभव प्रभू को जजूँ।
कर्मनिर्मूल कर स्वात्म अमृत चखूँ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा –

भवहर संभवनाथ! तुम पद में धारा करूँ।
हो आत्यंतिक शांति, चउसंघ में भी शांति हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

हरसिंगार गुलाब, सुरभित करते दश दिशा।
निजसुख संपति लाभ, पुष्पांजलि से पूजते।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक अर्घ्य

–शंभु छंद –

संभवजिन अधो ग्रैवेयक तज, नगरी श्रावस्ती में आये।
दृढ़रथ पितु मात सुषेणा के, वर गर्भ बसे जन हरषाये।।
फागुन सुदि अष्टमि तिथि उत्तम, मृगशिर नक्षत्र समय शुभ था।
इन्द्रों ने जन्मोत्सव कीया, पूजत ही पापकर्म नशता।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं फाल्गुनशुक्लाष्टम्यां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्रीसंभवनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब प्रभु ने जन्म लिया भू पर, देवों के आसन काँप उठे।
झुक गये मुकुट सब देवों के, माँ उत्तर देती युक्ती से।।
कार्तिक पूना मृगशिर नक्षत्र में, संभवप्रभु ने जन्म लिया।
मेरू पर सुरगण न्हवन किया, तिथि जन्म जजत सुख प्राप्त किया।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं कार्तिकशुक्लापूर्णिमायां जन्मकल्याणकप्राप्ताय श्रीसंभवनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेघों का विभ्रम देख विरक्त, हुए संभव मगसिर पूनम।
लौकांतिक सुर ने स्तुति की, सिद्धार्था पालकि सजि उस क्षण।।

इक सहस नृपति सह दीक्षा ली, उद्यान सहेतुक में प्रभु ने।
सुरपति ने उत्सव किया तभी, मैं नमूँ नमूँ प्रभु चरणों में।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मार्गशीर्षशुक्लापूर्णिमायां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्रीसंभवनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

कार्तिक वदि चौथी के मृगशिर, नक्षत्र रहा अपराण्ह समय।
उद्यान सहेतुक शाल्मलितरु, के नीचे केवल सूर्य उदय।।
संभव जिनवर का तरु अशोक, वर समवसरण में शोभ रहा।
भव भ्रमण निवारण हेतू मैं, पूजूँ केवल तिथि आज यहाँ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं कार्तिककृष्णाचतुर्थ्यां केवलज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीसंभवनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ चैत सुदी षष्ठी तिथि थी, अपराण्ह काल में ध्यान धरा।
इक सहस साधु सह कर्मनाश, निज सौख्य लिया प्रभु शिवंकरा।।
सम्मेदशिखर भी पूज्य बना, तिथि पूज्य बनी सुरगण आये।
निर्वाणकल्याणक पूजा की, हम अर्घ्य चढ़ाकर गुण गायें।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं चैत्रशुक्लाषष्ठ्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

-दोहा-

हे संभवजिन! आपमें, गुण अनंत विलसंत।
अष्टोत्तर शत गुण जजूँ, पुष्पांजलि विकिरंत।।1।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(108 अर्घ्य)

–रोला छंद–

पूजा योग्य महान्, सम्यग्दर्शन गुण हैं।
इस युत जन धनवान, पा लेते निज गुण हैं।।

इस गुण से तीर्थेश संभवनाथ बने हैं।
नमूँ नमूँ भगवंत, मिलते सुगुण घने हैं।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं सम्यक्त्वगुणाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वच्छ अतुल गुण श्रेष्ठ, पूजा योग्य जिन्हों में।
वे अर्हत्परमेष्ठि, सिद्धिरमा रत उनमें।।
मिले हमें गुण स्वच्छ, नमूँ नमूँ गुण गाऊँ।
अर्घ्य चढ़ा प्रत्यक्ष, जिन गुण संपति पाऊँ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वच्छगुणाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशांग श्रुतज्ञान, पूजा योग्य जिन्हों का।
दिव्यध्वनी अमलान, पाते भवदधि नौका।।
प्राप्त करूँ श्रुतज्ञान, साम्य सुधारस पाऊँ।
नित्य करूँ गुणगान, आत्मगुणांबुधि पाऊँ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं द्वादशांगाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय पूजा योग्य, मती ज्ञान को पाके।
केवलज्ञान मनोज्ञ, पाया ज्योति जलाके।।
आभिनिबोधिक ज्ञान, पूर्ण करो शिर नाऊँ।
संभव जिन भगवान, अर्घ्य चढ़ा सुख पाऊँ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं आभिनिबोधकाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुतमय अवधीज्ञान, अंगपूर्व से पूरण।
पाते भेदविज्ञान, कर लेते गुण पूरण।।
निज में ज्ञान विकास, बने त्रिजग परमात्मा।
पूजूँ शुद्ध प्रकाश, बनूँ नित्य शुद्धात्मा।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रुतावधिगुणाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवधिज्ञान महान, पूजा योग्य गुणाकर।
इससे प्रभु गुणवान, बने श्रेष्ठ रत्नाकर।।
संभव जिन भगवंत, चरणकमल को पूजूँ।
निजगुण से विलसंत, भव भव दुख से छूटूँ।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं अवधिगुणाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनपर्यय को पाय, अर्हत् पदवी पाई।
इन्द्रों ने शिर नाय, पूजा भक्ति रचाई।।
मैं भी पूजूँ नित्य, झुक झुक शीश नमाऊँ।
पाऊँ अविचल सौख्य, तीर्थंकर गुण गाऊँ।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मनःपर्ययभावाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवल गुण असहाय, पर की नहीं अपेक्षा।
ऐसे गुण को पाय, जग की करी उपेक्षा।।
संभव जिन को पूज, केवल ज्योति जगाऊँ।
सौ इन्द्रों से पूज्य, नमूँ नमूँ गुण गाऊँ।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं केवलगुणाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्योति स्वरूप, संभव प्रभु का गुण है।
श्रेष्ठ शुद्ध चिद्रूप, परमहंस का गुण है।।
नमूँ नमूँ शिर टेक, अर्घ्य चढ़ाकर पूजूँ।
मिले निजातम एक, सर्व दुखों से छूटूँ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं केवलस्वरूपाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवल दर्शन श्रेष्ठ, त्रिभुवन पूज्य कहाता।
नमत मिले पद ज्येष्ठ, मिटती सर्व असाता।।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, नमूँ नमूँ शिर नाऊँ।
पाऊँ गुण समुदाय, संभव प्रभु को ध्याऊँ।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं केवलदर्शनीय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–चौपाई–

केवलज्ञानी श्री अरिहंत, लोकालोक सकल जानंत।
कर्मनाश शिवधाम बसंत, जजूँ तुम्हें संभव भगवंत।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं केवलज्ञानाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हन् केवल वीर्य धरंत,प्रगट किया निज शक्ति अनंत।
कर्मनाश शिवधाम बसंत, जजूँ तुम्हें संभव भगवंत।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं केवलवीर्याय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन के मंगल करतार,श्री अरहंत देव सुखकार।
कर्मनाश शिवधाम बसंत, जजूँ तुम्हें संभव भगवंत।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं मंगलाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आत्मा अवलोकनकार, अर्हन् मंगल दर्शनसार।
कर्मनाश शिवधाम बसंत, जजूँ तुम्हें संभव भगवंत।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं मंगलदर्शनाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णज्ञान मंगलमय मान्य, अर्हत् पूजा योग्य महात्य।
कर्मनाश शिवधाम बसंत, जजूँ तुम्हें संभव भगवंत।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं मंगलज्ञानाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संभवप्रभु का वीर्य महान, मंगलदायी सर्वप्रधान।
कर्मनाश शिवधाम बसंत, जजूँ तुम्हें संभव भगवंत।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं मंगलवीर्याय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगल द्वादशांग श्रुतज्ञान, अर्हत् पद का मूल निदान।
कर्मनाश शिवधाम बसंत, जजूँ तुम्हें संभव भगवंत।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं मंगलद्वादशांगाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मतिज्ञान के भेद असंख्य, मंगल अर्हत् पद दें वंद्य।
कर्मनाश शिवधाम बसंत, जजूँ तुम्हें संभव भगवंत।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं मंगलाभिनिबोधकाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य भाव श्रुत मंगल सेतु, अर्हत्पद में माना हेतु।
कर्मनाश शिवधाम बसंत, जजूँ तुम्हें संभव भगवंत।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं मंगलश्रुताय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवधिज्ञान मंगलमय मूर्ति, कर देता अर्हत् गुणपूर्ति।
कर्मनाश शिवधाम बसंत, जजूँ तुम्हें संभव भगवंत।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं मंगलावधिज्ञानाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनपर्यय मंगलवरज्ञान, अर्हत्पद का मूल निदान।
कर्मनाश शिवधाम बसंत, जजूँ तुम्हें संभव भगवंत।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं मंगलमनःपर्ययज्ञानाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगल केवलज्ञान समस्त, अरिहंतों का सुगुण प्रशस्त।
कर्मनाश शिवधाम बसंत, जजूँ तुम्हें संभव भगवंत।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं मंगलकेवलेश्वराय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हन् मंगल केवल ईश, गणधर मुनिगण नावें शीश।
कर्मनाश शिवधाम बसंत, जजूँ तुम्हें संभव भगवंत।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं मंगलकेवलज्ञानाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगल केवल दर्शन श्रेष्ठ, अर्हंतों का गुण है एक।
कर्मनाश शिवधाम बसंत, जजूँ तुम्हें संभव भगवंत।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं मंगलकेवलदर्शनाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् मंगल केवल इष्ट, घातिकर्म को किया विनष्ट।
कर्मनाश शिवधाम बसंत, जजूँ तुम्हें संभव भगवंत।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं मंगलकेवलाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलरूप स्वभाव महान्, अर्हंतों का सर्वप्रधान।
कर्मनाश शिवधाम बसंत, जजूँ तुम्हें संभव भगवंत।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं मंगलकेवलरूपाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म जगत में मंगल धन्य, अर्हंतों में गुण अभिवंद्य।
कर्मनाश शिवधाम बसंत, जजूँ तुम्हें संभव भगवंत।।27।।

ॐ ह्रीं अर्हं मंगलधर्माय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगल धर्मस्वरूप जिनेश, त्रिभुवन के पति नमें हमेश।
कर्मनाश शिवधाम बसंत, जजूँ तुम्हें संभव भगवंत।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं मंगलधर्मस्वरूपाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम मंगल श्रीजिनराज, वंदन से पूरे सब काज।
कर्मनाश शिवधाम बसंत, जजूँ तुम्हें संभव भगवंत।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं मंगलोत्तमाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व लोक में उत्तम ईश, अर्हंतों को नाऊँ शीश।
कर्मनाश शिवधाम बसंत, जजूँ तुम्हें संभव भगवंत।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकोत्तमाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–नरेन्द्र छंद–

तीन भुवन में उत्तम गुण जो, उसे धरें अरहंता।
कर्म अघाती भी विनाश कर, भये सिद्ध भगवंता।।
संभव जिन के चरण जजूँ मैं, हृदय कमल में ध्याऊँ।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, नित नव मंगल पाऊँ।।31।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकोत्तमगुणाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक अलोक प्रकाशी उत्तम, ज्ञान लोक में माना।
इसे प्राप्त कर सिद्ध भये जो, लोक अग्र शिवथाना।।
संभव जिन के चरण जजूँ मैं, हृदय कमल में ध्याऊँ।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, नित नव मंगल पाऊँ।।32।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकोत्तमज्ञानाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक अलोक विलोके दर्शन, उत्तम है त्रिभुवन में।
इसे पाय अर्हंत बने फिर, तिष्ठें लोक शिखर में।।
संभव जिन के चरण जजूँ मैं, हृदय कमल में ध्याऊँ।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, नित नव मंगल पाऊँ।।33।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकोत्तमदर्शनाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक में सर्वश्रेष्ठ जो, वीर्य अनंती शक्ती।
इसे पाय अर्हंत बने फिर, मिली कर्म से मुक्ती।।

संभव जिन के चरण जजूँ मैं, हृदय कमल में ध्याऊँ।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, नित नव मंगल पाऊँ।।34।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकोत्तमवीर्याय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन जगत में अतिशय उत्तम, स्मृति पूज्य जिन्हों की।
अर्हत् सिद्ध बने उनकी यह, पूजा श्रेष्ठ गुणों की।।
संभव जिन के चरण जजूँ मैं, हृदय कमल में ध्याऊँ।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, नित नव मंगल पाऊँ।।35।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकोत्तमाभिनिबोधकाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवधिज्ञान त्रिभुवन में उत्तम, तीर्थंकर पददाता।
इसे पाय अर्हंत सिद्ध हों, नमत मिले सुखसाता।।
संभव जिन के चरण जजूँ मैं, हृदय कमल में ध्याऊँ।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, नित नव मंगल पाऊँ।।36।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकोत्तमअवधिबोधाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकोत्तम मनपर्यय पाके, अर्हत् लक्ष्मी पाई।
सिद्ध बने लोकाग्र विराजे, नमूँ स्वात्म सुखदायी।।
संभव जिन के चरण जजूँ मैं, हृदय कमल में ध्याऊँ।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, नित नव मंगल पाऊँ।।37।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकोत्तममनःपर्ययाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक में सर्वोत्तम है, केवलज्ञान प्रभू का।
इसको पाय नियम से शिवपद, इन भक्ती भव नौका।।
संभव जिन के चरण जजूँ मैं, हृदय कमल में ध्याऊँ।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, नित नव मंगल पाऊँ।।38।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकोत्तमकेवलज्ञानाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिहुँजग में केवल स्वरूप ही, सर्वोत्तम मुनि कहते।
इसे पाय शिवधाम प्राप्त हो, इन भक्ती दुख दहते।।
संभव जिन के चरण जजूँ मैं, हृदय कमल में ध्याऊँ।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, नित नव मंगल पाऊँ।।39।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकोत्तमकेवलस्वरूपाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घातिकर्म हन केवल असहायी पर्याय प्रगट हो।
लोकोत्तम अर्हत्पद से शिवपद भी स्वयं प्रगट हो।।
संभव जिन के चरण जजूँ मैं, हृदय कमल में ध्याऊँ।
सर्व अमंगल दूर भगाकर, नित नव मंगल पाऊँ।।40।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकोत्तमकेवलपर्यायाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

संभव जिन का द्रव्य ही, केवलद्रव्य प्रधान।
इसे पाय शिवतिय वरें, नमूँ नमूँ धर ध्यान।।41।।

ॐ ह्रीं अर्हं केवलद्रव्याय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन में उत्तम कहा, केवल द्रव्य जिनेश।
इसे पाय शिवतिय वरें, नमूँ तुम्हें परमेश।।42।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकोत्तमकेवलद्रव्याय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलद्रव्य स्वरूप हैं, लोकोत्तम अर्हंत।
संभव जिन को नित नमूँ, बन जाऊँ गुणवंत।।43।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकोत्तमकेवलद्रव्यरूपाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्रुवस्वभाव अर्हंत हैं, लोकोत्तम अभिराम।
सिद्धिरमा के पति बनें, शत शत करूँ प्रणाम।।44।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकोत्तमध्रौव्यभावाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तमभाव धरें सदा, संभवजिन भगवान।
सिद्धिरमा के पति बने, नमूँ सदा धर ध्यान।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमभावाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन में उत्तम कहा, स्थिर भाव अनूप।
तीर्थंकर भगवंत में, नमूँ नमूँ शिवभूप।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकोत्तमस्थिरभावाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वा

संभवप्रभु जग में शरण, शरणागत हैं भव्य।
सिद्धिरमापति को नमूँ, मिले स्वात्मसुख नव्य।।47।।

ॐ ह्रीं अर्हं शरणाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।47।।

शरणरूप संभवप्रभू, सिद्धिरमा के नाथ।
नमूँ भक्ति से मैं यहाँ, कीजे मुझे सनाथ।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हं शरणरूपाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संभवप्रभु के गुण शरण, शरण में जग में और।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय के, मिले चरण में ठौर।।49।।

ॐ ह्रीं अर्हं गुणशरणाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संभवप्रभु का ज्ञान ही, शरण जगत में मान्य।
सिद्धि रमापति को नमूँ, मिले स्वात्मगुण साम्य।।50।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानशरणाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन युगपत् देखते, लिया शरण अतएव।
नमूँ तीर्थकर आपको, करो अमंगल छेव।।51।।

ॐ ह्रीं अर्हं दर्शनशरणाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संभवप्रभु की शक्ति ही, शरणभूत तिहुँकाल।
अर्हत्प्रभु ही सिद्ध हो, नमूँ नमूँ तिहुँकाल।।52।।

ॐ ह्रीं अर्हं वीर्याय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।52।।

द्वादशांग श्रुत शरण है, इससे शिवपद होय।
ज्ञानकली विकसित करो, नमूँ भक्तिवश होय।।53।।

ॐ ह्रीं अर्हं द्वादशांगशरणाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

मतीज्ञान की शरण ले, पद अर्हंत धरंत।
तीर्थंकर प्रभु को जजूँ, भेदज्ञान विलसंत।।54।।

ॐ ह्रीं अर्हं आभिनिबोधशरणाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्यभावश्रुत शरण ले, तीर्थंकर पद पाय।
सिद्ध हुये उनको नमूँ, ज्ञानकली खिल जाय।।55।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रुतशरणाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवधिज्ञान को प्राप्त कर, तीर्थंकर भगवान।
शरण इन्हीं की है मुझे, नमूँ नमूँ गुणखान।।56।।

ॐ ह्रीं अर्हं अवधिबोधशरणाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनपर्ययवरज्ञान ही, शरण इन्द्र शत वंद्य।
इससे अर्हत् सिद्ध हों, नमूँ नमूँ अभिनंद्य।।57।।

ॐ ह्रीं अर्हं मनःपर्ययशरणाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान महान् ही, शरण अन्य नहिं कोय।
संभव जिनवर को नमूँ, पाप कर्ममल धोय।।58।।

ॐ ह्रीं अर्हं केवलशरणाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संभव केवलज्ञान ही, शरण स्वरूप प्रधान।
तीर्थंकर प्रभु को नमूँ, मिले निजातम ज्ञान।।59।।

ॐ ह्रीं अर्हं केवलशरणस्वरूपाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत्केवलधर्म ही, शरण भव्य को जान।
तीर्थंकर प्रभु को नमूँ, मिले स्वपर विज्ञान।।60।।

ॐ ह्रीं अर्हं केवलधर्मशरणाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत्प्रभु हैं केवली, मंगल गुण भंडार।
भव्यों के ये ही शरण, जजूँ भक्ति उर धार।।61।।

ॐ ह्रीं अर्हं केवलमंगलगुणशरणाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर मंगल गुण कहे, शरणभूत हैं एक।
जजूँ अर्घ्य ले भक्ति से नमूँ सदा शिर टेक।।62।।

ॐ ह्रीं अर्हं मंगलगुणशरणाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर का ज्ञान ही, मंगलदायी सिद्ध।
शरणभूत है जगत में, नमत करूँ यम विद्ध।।63।।

ॐ ह्रीं अर्हं मंगलज्ञानशरणाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगलमय दर्शन शरण, श्रीजिनवर का श्रेष्ठ।
मेरी भी रक्षा करो, नमूँ नमूँ गुण ज्येष्ठ।।64।।

ॐ ह्रीं अर्हं मंगलदृष्टिशरणाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीजिनवर का बोध ही, मंगल शरण स्वरूप।
बोधि समाधी हेतु मैं, जजूँ शुद्ध चिद्रूप।।65।।

ॐ ह्रीं अर्हं मंगलबोधशरणाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सखी छंद–

संभवप्रभु मंगलकारी, कैवल्यज्ञान के धारी।
मैंने ली है प्रभु शरणा, पूजन से भवदधि तरना।।66।।

ॐ ह्रीं अर्हं मंगलकेवलशरणाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीनों लोकों में उत्तम, जिनवर की शरण अनूपम।
मैंने ली है प्रभु शरणा, पूजन से भवदधि तरना।।67।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकोत्तमशरणाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकोत्तम गुण जिनवर के, हैं शरण सभी भक्तों के।
मैंने ली है प्रभु शरणा, पूजन से भवदधि तरना।।68।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकोत्तमगुणशरणाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन में उत्तम शक्ती, तीर्थंकर प्रभु में प्रगटी।
मैंने ली है प्रभु शरणा, पूजन से भवदधि तरना।।69।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकोत्तमवीर्यशरणाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकोत्तम वीरजगुण है, जिनवर में प्रगट अतुल है।
मैंने ली है प्रभु शरणा, पूजन से भवदधि तरना।।70।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकोत्तमवीर्यगुणशरणाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब कुश्रुत रहित लोकोत्तम, जिन द्वादशांग श्रुत उत्तम।
मैंने ली है प्रभु शरणा, पूजन से भवदधि तरना।।71।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकोत्तमद्वादशांगशरणाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब कुमति कुनय से विरहित, मतिज्ञान शरण उत्तम नित।
इससे तीर्थेश हुये हैं, हम पूजत कर्म दहे हैं।।72।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकोत्तमआभिनिबोधशरणाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकोत्तम अवधि शरण से, अर्हंत सिद्ध हों प्रगटे।
इनके चरणों की शरणा, पूजत ही पातक हरना।।73।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकोत्तमअवधिशरणाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनपर्यय ज्ञान शरण है, लोकोत्तम जिनपद दे है।
तीर्थंकर सिद्ध हुये हैं, हम पूजत सौख्य लिये हैं।।74।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकोत्तममनःपर्ययशरणाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आवरणरहित केवल है, जग में सर्वोच्च शरण है।
जिन होकर सिद्ध हुये जो, जो पूजें सौख्य लहें वो।।75।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकोत्तमकेवलशरणाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरकृत वैभव अनुपम है, अंतर वैभव निजगुण हैं।
जिन विभव पाय शिव पहुँचे, पूजत ही निजगुण चमकें।।76।।

ॐ ह्रीं अर्हं लोकोत्तमविभूतिप्रधानाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर वैभव समवसरण में, जिनधर्म शरण त्रिभुवन में।
तीर्थंकर प्रभु को पूजूँ, भव भव के दुख से छूटूं।।77।।

ॐ ह्रीं अर्हं विभूतिधर्मशरणाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आनंत्य चतुष्टय गुण है, सुख दर्श ज्ञान वीरज हैं।
चउघाति नशें गुण प्रगटे, पूजत ही निजगुण प्रगटें।।78।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतचतुष्टयाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो गुणअनंत संपन्ना, उसमें गुण चार प्रधाना।
श्री संभवनाथ जजूँ मैं, अगणित गुणरत्न भजूँ मैं।।79।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतगुणचतुष्टयाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु गर्भ विषे त्रय ज्ञानी, अर्हंत स्वयंभू नामी।
गुरु बिन ज्ञानी शिवकंता, मैं नमूँ नमूँ भगवंता।।80।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिज्ञानस्वयंभुवे श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्में दश अतिशय धारी, तीर्थेश वरी शिवनारी।
पूजत अतिशय गुण पाऊँ, सब तन की व्याधि नशाऊँ।।81।।

ॐ ह्रीं अर्हं दशातिशायिस्वयंभुवे श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दश अतिशय घाती क्षय से, प्रगटें तीर्थंकर जिन के।
अर्हंत बने फिर सिद्धा, पूजत पाऊँ गुण सिद्धा।।82।।

ॐ ह्रीं अर्हं घातिक्षयदशातिशयाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदह अतिशय सुरकृत हैं, अर्हत्प्रभु का वैभव है।
फिर निश्चित सिद्ध बने हैं, हम पूजत कर्म हने हैं।।83।।

ॐ ह्रीं अर्हं देवकृतचतुर्दशातिशयाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौंतिस अतिशय जिनवर के, तीर्थंकर वैभव चमके।
फिर सिद्ध बने मुनि वंदें, हम पूजें मन आनंदे।।84।।

ॐ ह्रीं अर्हं चतुस्त्रिंशत्अतिशयविराजमानाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हंत अनंत गुणों युत, फिर सिद्ध बने यम को हत।
हम पूजें ध्यावें नित ही, पायें जिनगुण की निधि ही।।85।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतगुणाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तरगुण लाख चुरासी, सब तप के अंतर्भासी।
संभव जिनवर को वंदूं, निजगुण पाके आनंदूं।।86।।

ॐ ह्रीं अर्हं तपोऽनंतगुणाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वरध्यान में ध्येय अनंते, कर्मारि हना ध्यायंते।
तीर्थंकर प्रभु का वंदन, करता भव भव का खंडन।।87।।

ॐ ह्रीं अर्हं ध्यानानंतध्येयाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मा अनंत गुणधारी, वह परमहंस अविकारी।
तीर्थेश गुणों की अर्चा, मेटे भव दुख की चर्चा।।88।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतगुणात्मने श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो परम श्रेष्ठ परमात्मा, सौ इंद्र वंद्य सिद्धात्मा।
उनकी पूजा भक्ती से, तर जाते भववारिधि से।।89।।

ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत्स्वरूप में गुप्ती, कर देती भव से मुक्ती।
तीर्थेश गुणों की भक्ती, करने से प्रगटे शक्ती।।90।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वरूपगुप्तये श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा–

राग आदि से हीन, साम्यस्वभावी देव हो।
जजूँ भक्ति में लीन, समरस सुख झरना मिले।।91।।

ॐ ह्रीं अर्हं साम्यस्वभावाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साम्यस्वरूप महान्, समतादिक गुण के निलय।
नमूँ नमूँ गुणखान, साम्यरूप होवे प्रगट।।92।।

ॐ ह्रीं अर्हं साम्यस्वरूपाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अनंत की राशि, परमशुद्ध परमातमा।
नमत मिले सुख राशि, दोष अनंत समाप्त हो।।93।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतगुणाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अनंत अभिराम, आप रूप हो परिणमे।
शत शत करूँ प्रणाम, मिले नंतगुण संपदा।।94।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतगुणस्वरूपाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म अनंत धरंत, अनेकांत के नाथ हो।
तुम पद भक्ति करंत, समकित निधि अनुपम मिले।।95।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतधर्माय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म अनंत समेत, आप स्वरूप महान् है।
जजूँ स्वात्म पद हेतु, निजस्वरूप विकसित करो।।96।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतधर्मस्वरूपाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राग द्वेष से दूर, शम स्वभाव भगवान् हो।
ज्ञान सुधारस पूर, भर दीजे भक्ती करूँ।।97।।

ॐ ह्रीं अर्हं शमस्वभावाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शम से तुष्ट महान, सब विभाव से दूर हो।
जजत बनूँ धनवान्, स्वात्म सौख्य भंडार हो।।98।।

ॐ ह्रीं अर्हं शमतुष्टाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहिं धन से संतोष, उपशम से ही शांति हो।
मिले स्वात्म संतोष, जजत कषायों को हनूँ।।99।।

ॐ ह्रीं अर्हं शमसंतोषाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साम्यभाव स्थान, पमानंद प्रदानकृत्।
सप्तपरमस्थान, संभवप्रभु जजते मिले।।100।।

ॐ ह्रीं अर्हं साम्यस्थानाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–स्रग्विणी छंद–

कर्म आठों सभी जीव को दुःख दें।
मुक्ति साम्राज्य को छीन लीया प्रभो।।
स्वात्म सिद्धी मिले ज्ञानज्योती जगे।
आप को पूजते सर्व व्याधी टले।।101।।

ॐ ह्रीं अर्हं कर्माष्टकरहिताय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक सौ आठ चालीस प्रकृती कही।
आपने नाशके मोक्षलक्ष्मी लिया।।
कर्म से शून्य परमात्मसुख के लिये।
मैं जजूँ आपको लब्धियां नौ मिलें।।102।।

ॐ ह्रीं अर्हं शताष्टचत्वारिंशत्कर्मप्रकृतिमुक्ताय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म के भेद संख्यात हों आठ के।
नाश के आपने सिद्धिकांता वरी।।

स्वात्मसिद्धी मिले ज्ञानज्योती जगे।
आपको पूजते सर्व व्याधी टले।।103।।

ॐ ह्रीं अर्हं संख्यातकर्मछेदकाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म के ही असंख्यात भी भेद हों।
नित्य संसार में ये रुलाते रहें।।
आपने नाश के सिद्धिकन्या वरी।
मैं नमूँ आपको स्वात्मसंपद मिले।।104।।

ॐ ह्रीं अर्हं असंख्यातकर्मरहिताय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म के भेद ये जो अनंते कहे।
सौख्य मेरा अनंता इन्होंने हरा।।
आपने नाश के सिद्धिकांता वरी।
मैं नमूँ आपको स्वात्मसंपद मिले।।105।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतकर्मविमुक्ताय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

कर्म नाशे अनंते अनंते सभी।
आप ही ज्ञान आनन्त्य सिंधू कहे।।
मैं अनंतों गुणों को स्वयं ही वरूँ।
शक्ति ऐसी मिले आपकी भक्ति से।।106।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तानन्तकर्मरहिताय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नित्य आनंद के हो स्वभावी तुम्हीं।
सौख्य शाश्वत मिले आपकी भक्ति से।।
वर्ण गंधादि से शून्य शुद्धात्मा।
मैं जजूँ आपको आश पूरो प्रभो!।।107।।

ॐ ह्रीं अर्हं नित्यानंदस्वभावाय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम आनंद धर्मा गुणांभोधि हो।
स्वात्मआनंद पाऊँ प्रभो भक्ति से।।
कल्पतरु आपसे याचना मैं करूं।
दीजिये तीन ही रत्न पूजूँ तुम्हें।।108।।

ॐ ह्रीं अर्हं परमानंदधर्माय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-पूर्णार्घ्यं-

(तर्ज–चलो बंधुओं तुम्हें दिखायें.....)

तीर्थंकर की करें वंदना, जो अनंत गुणवान हैं।
जन्म मरण के दुःख मिटाकर, बने सिद्ध भगवान् हैं।।
वंदे जिनवरं, वंदे जिनवरं, वंदे जिनवरं, वंदे जिनवरं।।
एक शुद्ध निज आत्मा ध्याकर, शुद्ध बुद्ध कृतकृत्य बने।
चतुर्गती का भ्रमण दूर कर, शेष अघाती कर्म हनें।।
ऐसे संभव जिन को पूजूँ, वे ही पूज्य महान् हैं।
जन्म मरण के.....।।वंदे जिनवरं.।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं सम्यक्त्वगुणादिपरमानंदधर्मपर्यंताष्टोत्तरशतगुणसमन्विताय श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-**ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री संभवनाथतीर्थंकराय नमः।**

(108 या 9 बार मंत्र जपें)

जयमाला

–दोहा–

पूरब भव में आपने, सोलहकारण भाय।
तीर्थंकर पद पाय के, तीर्थ चलाया आय।।1।।

–रोला छंद–

दर्श विशुद्धि प्रधान, नित्यप्रती प्रभु ध्या के।
अष्ट अंग से शुद्ध, दोष पच्चीस हटा के।।

मन वच काय समेत, विनय भावना भायी।
मुक्ति महल का द्वार, भविजन को सुखदायी।।2।।

व्रतशीलों में आप, नहिं अतिचार लगाया।
संतत ज्ञानाभ्यास, करके कर्म खपाया।।
भवतन भोग विरक्त, मन संवेग बढ़ाया।
शक्ती के अनुसार, चउविध दान रचाया।।3।।

बारहविध तपधार, आतम शक्ति बढ़ाई।
धर्मशुक्ल से सिद्ध, साधुसमाधि कराई।।
दशविध मुनि की नित्य, वैयावृत्य किया था।
सर्व शक्ति से पूर्ण, बहु उपकार किया था।।4।।

श्री अर्हंत जिनेन्द्र, भक्ति हृदय में धर के।
सूरि परम परमेश, गुण संस्तवन उचर के।।
उपाध्याय गुरु देव, शिवपथ के उपदेष्टा।
प्रवचन भक्ति समेत, गुणगण भजा हमेशा।।5।।

षट् आवश्यक नित्य, करके दोष नशाया।
हानिरहित परिपूर्ण, निज कर्तव्य निभाया।।
मार्गप्रभावन पाय, धर्म महत्त्व बढ़ाया।
प्रवचन में वात्सल्य, कर निज गुण प्रगटाया।।6।।

सोलहकारण भाय, तीर्थंकर पद पाया।
घातिकर्म को नाश, केवल सूर्य उगाया।।
लोकालोक प्रकाश, सौख्य अतीन्द्रिय पायो।
दिव्यध्वनी से नित्य, धर्म सुतीर्थ चलायो।।7।।

द्वादश सभा समूह, हाथ जोड़कर बैठे।
पीते वचन पियूष, स्वात्म निधी को लेते।।
भव्य अनंतानंत, जग से पार किया है।
सौ इन्द्रों से वंद्य, निज सुख सार लिया है।।8।।

जय जय संभवनाथ, गणधर गुरु तुम वंदें।
जय जय संभवनाथ, सुरपति गण अभिनंदें।।
जय तीर्थंकर देव, धर्मतीर्थ के कर्ता।
तुम पद पंकज सेव, करते भव्य अनंता।।9।।

चारुषेण गुरुदेव, गणधर प्रमुख कहाये।
सब गणपति गुरुदेव, इक सौ पाँच कहाये।।
सब मुनिवर दो लाख, नग्न दिगम्बर गुरु हैं।
आकिंचन मुनिनाथ, कहें रत्नत्रययुत हैं।।10।।

धर्मार्या वरनाम, गणिनी प्रमुख कहायीं।
आर्यिकाएँ त्रय लाख, बीस हजार बतायीं।।
श्रावक हैं त्रय लाख, धर्म क्रिया में तत्पर।
श्राविकाएं पण लाख, सम्यग्दर्शन निधिधर।।11।।

संभव जिनके पास त्रिमुख यक्ष नित रहते।
शासन देव प्रसिद्ध धर्म पक्षरत रहते।।
यक्षी हैं प्रज्ञप्ति शासन देवी मानी।
समवसरण में नित्य रहें कहे जिनवाणी।।12।।

संभवनाथ जिनेन्द्र, समवसरण में राजें।
करें धर्म उपदेश, भविजन कमल विकासें।।
जो जन करते भक्ति, नरक तिर्यग्गति नाशें।
देव आयु को बांध, भवसंतती विनाशें।।13।।

सोलह शत कर तुंग, प्रभु का तनु स्वर्णिम है।
साठ लाख पूर्वायु, वर्ष प्रमित थिति शुभ है।।
अश्वचिन्ह से नाथ, सभी आपको जानें।
तीर्थंकर जगवंद्य, त्रिभुवन ईश बखाने।।14।।

भरें सौख्य भंडार, जो जन स्तवन उचरते।
पावें नवनिधि सार, जो प्रभु पूजन करते।।

रोग शोक आतंक, मानस व्याधि नशावें।
पावें परमानंद, जो प्रभु के गुण गावें।।15।।

नमूँ नमूँ नत शीश, संभवजिन के चरणा।
मिले स्वात्म नवनीत, लिया आपकी शरणा।।
क्षायिकलब्धि महान, पाऊँ भव दुःख नाशूँ।
''ज्ञानमती'' कैवल्य, मिले स्वयं को भासूँ।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीसंभवनाथतीर्थंकराय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

-गीता छंद-

जो भव्य संभवनाथ की, नित भक्ति से अर्चा करें।
वे भवभ्रमण को दूर कर, सम्यक् गती प्राप्ती करें।।
पंचमगती को प्राप्त कर, लोकाग्र पर निज में रमें।
सज्ज्ञानमति आर्हन्त्य सुख आनन्त्यगुणमय परिणमें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

बड़ी जयमाला

–दोहा–

मोहनीय द्वय आवरण, अंतराय को घात।
ज्ञान दर्श सुख वीर्य गुण, प्राप्त किया निर्बाध।।1।।

–स्रग्विणीछंद–

जै महासौख्य दातार भरतार हो।
जै महानंद करतार भव पार हो।।
पूरिये नाथ! मेरी मनोकामना।
हो सदा स्वात्मतत्वैक की भावना।।2।।

वान व्यंतर भवन वासि औ ज्योतिषी।
कल्पवासी सभी देव ध्याके सुखी।।
पूरिये नाथ! मेरी मनोकामना।
हो सदा स्वात्मतत्वैक की भावना।।3।।

इंद्र धरणेंद्र मनुजेंद्र वंदन करें।
योगि नायक सदा आप गुण उच्चरें।।
पूरिये नाथ! मेरी मनोकामना।
हो सदा स्वात्मतत्वैक की भावना।।4।।

मोह के वश्य हो नाथ मैं दुख सहा।
जो तिहुंलोक में भी भटकता रहा।।
पूरिये नाथ! मेरी मनोकामना।
हो सदा स्वात्मतत्वैक की भावना।।5।।

नर्क के दुःख की क्या कहूँ मैं कथा।
नाथ! तुम केवली सर्व जानो व्यथा।।
पूरिये नाथ! मेरी मनोकामना।
हो सदा स्वात्मतत्वैक की भावना।।6।।

योनि तिर्यंच में काल बीता घना।
दुःख ही दुख जहाँ सुक्ख का लेश ना।।
पूरिये नाथ! मेरी मनोकामना।
हो सदा स्वात्मतत्वैक की भावना।।7।।

मैं मनुष योनि में सौख्य को चाहता।
किंतु सब ओर से क्लेश ही पावता।।
पूरिये नाथ! मेरी मनोकामना।
हो सदा स्वात्मतत्वैक की भावना।।8।।।

देवयोनी मिली फिर भी शांती नहीं।
मानसिक और मृत्यू की पीड़ा सही।।
पूरिये नाथ! मेरी मनोकामना।
हो सदा स्वात्मतत्वैक की भावना।।9।।

रत्न सम्यक् बिना मैं भिखारी रहा।
सौख्य की चाह से दुःख पाता रहा।।
पूरिये नाथ! मेरी मनोकामना।
हो सदा स्वात्मतत्वैक की भावना।।10।।

नाथ! तुम भक्ति से आज सम्यक् मिला।
कर कृपा दीजिए ज्ञान सूरज खिला।।
पूरिये नाथ! मेरी मनोकामना।
हो सदा स्वात्मतत्वैक की भावना।।11।।

मुक्ति जब तक न हो नाथ! मांगूँ यही।
आपके पाद की भक्ति छूटे नहीं।।
पूरिये नाथ! मेरी मनोकामना।
हो सदा स्वात्मतत्वैक की भावना।।12।।

बोधि का लाभ हो 'ज्ञानमति' पूर्ण हो।
सर्व संपति मिले सौख्य परिपूर्ण हो।।

पूरिये नाथ! मेरी मनोकामना।
हो सदा स्वात्मतत्वैक की भावना।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री संभवनाथतीर्थंकराय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

-गीता छंद-

जो भव्य संभवनाथ की, नित भक्ति से अर्चा करें।
वे भवभ्रमण को दूर कर, सम्यक्गती प्राप्ती करें।।
पंचमगती को प्राप्त कर, लोकाग्र पर निज में रमें।
सज्ज्ञानमति आर्हन्त्य सुख आनन्त्यगुणमय परिणमें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

प्रशस्ति

शांतिनाथ भगवान को, नमन करूँ शत बार।
कुंदकुंद गुरुदेव को, वंदूँ भक्ति अपार।।1।।

कुंदकुंद आम्नाय में, गच्छ सरस्वति मान्य।
बलात्कारगण सिद्ध है, उनमें सूरि प्रधान।।2।।

सदी बीसवीं के प्रथम, शांतिसागराचार्य।
उनके पट्टाचार्य थे, वीरसागराचार्य।।3।।

देकर दीक्षा आर्यिका, दिया ज्ञानमति नाम।
गुरुवर कृपाप्रसाद से, सार्थ हुआ कुछ नाम।।4।।

वीर अब्द पच्चीस सौ, उनतालिस सुखकंद।
चैत्र शुक्ल षष्ठी तिथी, पूर्ण किया जिनवंद्य।।5।।

श्री संभव तीर्थेश का, यह विधान सुखकार।
गणिनी ज्ञानमती रचित, यह है मुक्तीद्वार।।6।।

तीर्थंकर की अर्चना, करो करावो भव्य।
भव भव भ्रमण समाप्त कर, पावो निज सुख नव्य।।7।।

जब तक जग में सौख्यप्रद, जिनशासन गुणखान।
तब तक भविजन भव हरे, संभवनाथ विधान।।8।।

।।इति संभवनाथविधानम् संपूर्णम्।।

श्रावस्ती तीर्थ क्षेत्र पूजा

रचयित्री-आर्यिका चन्दनामती

स्थापना (शंभु छंद)

श्री संभव जिन के जन्मकल्याणक, से पावन श्रावस्ती है।
जहाँ मात सुषेणा के आँगन में, हुई रत्न की वृष्टी है।।
उस श्रावस्ती तीरथ की पूजन, करके पुण्य कमाना है।
आह्वानन स्थापन करके, आत्मा में तीर्थ बसाना है।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसंभवनाथजन्मभूमिश्रावस्तीतीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसंभवनाथजन्मभूमिश्रावस्तीतीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसंभवनाथजन्मभूमिश्रावस्तीतीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक (नंदीश्वर पूजा की चाल)

कंचन झारी में नीर, लेकर धार करूँ।
हो जाऊँ भवदधि तीर, ऐसे भाव करूँ।।
श्रावस्ती पावन तीर्थ, पूजूँ मन लाके।
बढ़ जावे आतम कीर्ति, संभव जिन ध्याके।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसंभवनाथजन्मभूमिश्रावस्तीतीर्थक्षेत्राय जन्म-जरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन कर्पूर मिलाय, घिस कर लाऊँ मैं।
संसार ताप मिट जाय, शांति पाऊँ मैं।।
श्रावस्ती पावन तीर्थ, पूजूँ मन लाके।
बढ़ जावे आतम कीर्ति, संभव जिन ध्याके।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसंभवनाथजन्मभूमिश्रावस्तीतीर्थक्षेत्राय संसार-तापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती सम उज्वल धौत, तंदुल लाया मैं।
अक्षयपद प्राप्ती हेतु, पुंज चढ़ाया है।।
श्रावस्ती पावन तीर्थ, पूजूँ मन लाके।
बढ़ जावे आतम कीर्ति, संभव जिन ध्याके।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसंभवनाथजन्मभूमिश्रावस्तीतीर्थक्षेत्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

ले भाँति भाँति के फूल, माला गूंथ लिया।
नश जायं काम के शूल, प्रभु पद पूज लिया।।
श्रावस्ती पावन तीर्थ, पूजूँ मन लाके।
बढ़ जावे आतम कीर्ति, संभव जिन ध्याके।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसंभवनाथजन्मभूमिश्रावस्तीतीर्थक्षेत्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य थाल भर लाय, निकट चढ़ाऊँ मैं।
मम क्षुधारोग नश जाय, निज गुण पाऊँ मैं।।
श्रावस्ती पावन तीर्थ, पूजूँ मन लाके।
बढ़ जावे आतम कीर्ति, संभव जिन ध्याके।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसंभवनाथजन्मभूमिश्रावस्तीतीर्थक्षेत्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक की ज्योति जलाय, आरति करना है।
मम मोह नष्ट हो जाय, निज गुण वरना है।।
श्रावस्ती पावन तीर्थ, पूजूँ मन लाके।
बढ़ जावे आतम कीर्ति, संभव जिन ध्याके।।6।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसंभवनाथजन्मभूमिश्रावस्तीतीर्थक्षेत्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

वर गंध सुगंधित धूप, अग्नी में ज्वालूँ।
मिल जावे सौख्य अनूप, कर्म अरी ज्वालूँ।।

श्रावस्ती पावन तीर्थ, पूजूँ मन लाके।
बढ़ जावे आतम कीर्ति, संभव जिन ध्याके।।7।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसंभवनाथजन्मभूमिश्रावस्तीतीर्थक्षेत्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर सेव बादाम, फल को लाऊँ मैं।
हो आतम में विश्राम, अतः चढ़ाऊँ मैं।।
श्रावस्ती पावन तीर्थ, पूजूँ मन लाके।
बढ़ जावे आतम कीर्ति, संभव जिन ध्याके।।8।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसंभवनाथजन्मभूमिश्रावस्तीतीर्थक्षेत्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुष्प, नेवज दीप लिया।
''चन्दना'' धूप फल युक्त, तीरथ अर्घ्य दिया।।
श्रावस्ती पावन तीर्थ, पूजूँ मन लाके।
बढ़ जावे आतम कीर्ति, संभव जिन ध्याके।।9।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसंभवनाथजन्मभूमिश्रावस्तीतीर्थक्षेत्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शेर छंद

जिस तीर्थ की पवित्रता स्वयं प्रसिद्ध है।
उसके लिए जलधार तो बस इक निमित्त है।।
आत्मा में शांति एवं जग भर में शांति हो।
त्रयधार देके तीन रत्न मुझको प्राप्त हों।।

शांतये शांतिधारा

फूलों के जिस उद्यान में संभव प्रभू खेले।
उद्यान वह साक्षात् नहिं श्रावस्ती में भले।।
लेकिन वही संकल्प तुच्छ पुष्पों में किया।
पुष्पांजली के द्वारा भक्ति को प्रगट किया।।

दिव्य पुष्पांजलिः

श्रावस्ती तीर्थक्षेत्र के अर्घ्य (शंभु छंद)

फाल्गुन सुदि अष्टमि को जहाँ पर, माता को सोलह स्वप्न दिखे।
दृढ़रथ राजा ने बतलाया, तुम गर्भ में श्रीजिनराज बसे।।
श्रावस्ती में उससे छह महिने, पहले रत्न बरसते थे।
मैं अर्घ्य चढ़ाऊँ उसको यहाँ, आने को इन्द्र तरसते थे।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसंभवनाथगर्भकल्याणकपवित्रश्रावस्तीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक सुदि पूनो को जहाँ पर, संभव जिनवर का जन्म हुआ।
दृढ़रथ पितु मात सुषेणा के संग, जहाँ का कण-कण धन्य हुआ।।
पितु दान किमिच्छक बाँट रहे, थे जहाँ पुत्र-जन्मोत्सव पर।
उस जन्मकल्याणक से पवित्र, श्रावस्ती की पूजा रुचिकर।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसंभवनाथजन्मकल्याणकपवित्रश्रावस्तीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जहाँ ब्याह किया औ राज्य किया , बहुतेक समय संभवप्रभु ने।
फिर मेघ विघटते देख वहीं, वैराग्य भाव धारा प्रभु ने।।
श्रावस्ती में उस मगशिर पूनो, को लौकांतिक सुर आये।
दीक्षा कल्याणक से पवित्र, श्रावस्ती के हम गुण गायें।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसंभवनाथदीक्षाकल्याणकपवित्रश्रावस्तीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावस्ती में तपकर के संभव, जिन को केवलज्ञान हुआ।
उद्यान सहेतुक में शाल्मलि, तरु नीचे प्रगटित ज्ञान हुआ।।
मगशिर वदि चौथ तिथी को जहाँ पर, अधर बना था समवसरण।
उस पावन समवसरण भूमी को, अर्घ्य चढ़ाकर करूँ नमन।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसंभवनाथकेवलज्ञानकल्याणकपवित्रश्रावस्तीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

दोहा

चार कल्याणक से सहित, पावन तीर्थ महान।
श्रावस्ती को अर्घ्य दे, चाहूँ आतमज्ञान।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्रीसंभवनाथगर्भजन्मतपज्ञानचतुःकल्याणक-पवित्रश्रावस्तीतीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं श्रावस्तीजन्मभूमिपवित्रीकृत श्रीसंभवनाथजिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

शंभु छन्द

जय जय तीर्थंकर संभवप्रभु की, जन्मभूमि मंगलकारी।
जय जय श्रावस्ती नगरी की, देवोपुनीत महिमा भारी।।
सौधर्म इन्द्र जिस नगरी की, त्रय प्रदक्षिणा कर आया था।
अपने संग में शचि इन्द्राणी एवं परिकर बहु लाया था।।1।।

जब गर्भ में तीर्थंकर आये, तब उत्सव गर्भकल्याण किया।
पितु माता की पूजा करके, वस्त्रादिक से सम्मान किया।।
श्री ह्री धृति आदि देवियों को, माता की सेवा में लाये।
त्रैलोक्यपती के जनक और जननी के गुण गा हरषाये।।2।।

जब जन्म लिया तीर्थंकर ने, तब श्रावस्ती का क्या कहना।
वहाँ का हर कण रोमांचित था, फिर मात पिता का क्या कहना।।
स्वर्णिम शरीर की आभा को, दो नेत्र से इन्द्र न देख सका।
तब सहस नेत्र कर देख-देख, वह प्रभु दर्शन कर नहीं थका।।3।।

जन्मोत्सव मेरुसुदर्शन पर, कर श्रावस्ती प्रभु को लाये।
वहाँ पुनः प्रभू का जन्मोत्सव, लख पुरवासी भी हरषाये।।
श्रावस्ती के हर घर में संभव-नाथ प्रभू की चर्चा थी।
हर नगर गली औ शहरों में, संभवजिन की ही अर्चा थी।।4।।

तीर्थंकर क्रम में सभी जानते, अश्वचिन्ह से संभव को।
संभव जिन तीर्थंकर बनकर, करते थे कार्य असंभव को।।
भोजन न किया श्रावस्ती का, दीक्षा से पहले जिनवर ने।
दीक्षा लेकर आहार हेतु, चर्या करते थे घर-घर वे।।5।।

संभव के चार कल्याणक से, पावन श्रावस्ती नगरी है।
उनके निर्वाणकल्याणक से, पावन सम्मेदशिखर गिरि है।।
अब यहाँ मुख्यतः जन्मभूमि, अर्चन का भाव बनाया है।
उसके माध्यम से और सभी, कल्याणक का क्रम आया है।।6।।

शब्दों में शक्ति नहीं प्रभु जी, बस भाव तीर्थ पूजन का है।
''चन्दनामती'' तीरथ गाथा, कहने को शब्द भला क्या हैं।।
इन्द्रों मुनियों से वंद्य जन्म, नगरी को वन्दन करना है।
श्रावस्ती नगरी के प्रति यह, जयमाल समर्पित करना है।।7।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसंभवनाथजन्मभूमिश्रावस्तीतीर्थक्षेत्राय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

-गीता छन्द-

जो भव्य प्राणी जिनवरों की, जन्मभूमि को नमें।
तीर्थंकरों की चरणरज से, शीश उन पावन बनें।।
कर पुण्य का अर्जन कभी तो, जन्म ऐसा पाएंगे।
तीर्थंकरों की श्रृँखला में, ''चन्दना'' वे आएंगे।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।।

भगवान श्री संभवनाथ की आरती

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–मैं तो आरती उतारूं रे.....

मैं तो आरती उतारूं रे, सम्भव जिनेश्वर की,
जय जय जिनेन्द्र प्रभु, जय जय जय-2।।टेक.।।

इस युग के तृतीय प्रभू, तुम्हीं तो कहलाए, तुम्हीं.....
पिता दृढ़रथ सुषेणा मात, पा तुम्हें हरषाए, पा.....
श्रावस्ती धन्य-धन्य, इन्द्रगण प्रसन्नमन, उत्सव मनाएं रे
हो जन्म उत्सव मनाएँ रे।।मैं.....।।1।।

मगशिर सुदी पूनो तिथी, हुए प्रभु वैरागी, हुए.....
सिद्ध प्रभुवर की ले साक्षी, जिनदीक्षा धारी, जिन.....
श्रेष्ठ पद की चाह से, मुक्ति पथ की राह ले, आतम को ध्याया रे
प्रभू ने आतम को.....।।मैं.....।।2।।

वदि कार्तिक चतुर्थी तिथि, केवल रवि प्रगटा, केवल.....
इन्द्र आज्ञा से धनपति ने, समवसरण को रचा, समवसरण.....
दिव्यध्वनि खिर गई, ज्ञानज्योति जल गई, शिवपथ की ओर चले,
अनेक जीव शिवपथ की ओर चले।।मैं.....।।3।।

चैत्र सुदि षष्ठी तिथि को, मोक्षकल्याण हुआ, मोक्ष.....
प्रभू जाकर विराजे वहाँ, सिद्धसमूह भरा, सिद्ध.....
सम्मेदगिरिवर का, कण-कण भी पूज्य है, मुक्ति जहां से मिली,
प्रभू को मुक्ति जहाँ से मिली।।मैं.....।।4।।

स्वर्ण थाली में रत्नदीप ला, आरति मैं कर लूँ, आरति.....
करके आरति प्रभो तेरी, मुक्तिवधू वर लूँ, मुक्ति.....
त्रैलोक्य वंद्य हो, काटो जगफंद को, 'चंदनामती' ये कहे
प्रभूजी ''चंदनामती'' ये कहे।।मैं.....।।5।।

तीर्थंकर श्री संभवनाथ की जन्मभूमि

श्रावस्ती तीर्थ की आरती

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–मेरे देश की धरती.....

तीरथ श्रावस्ती की आरति को दीप जला कर लाए,
तीरथ श्रावस्ती।।टेक.।।

श्री सम्भव जिन के गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान चार कल्याण हुए।
दृढ़राज पिता अरु मात सुषेणा, प्रभू जन्म से धन्य हुए।।
नगरी में हर्ष अपार हुआ.....
नगरी में हर्ष अपार हुआ, घण्टे शहनाई बाज रहे।
इक्ष्वाकु वंश के भास्कर को, पा जनता हर क्षण मुदित रहे।।
तीरथ श्रावस्ती.....।।1।।

सुरपति की आज्ञा से धनपति ने, रतन जहाँ बरसाए थे।
दीक्षा ली थी जब जिनवर ने, तब लौकान्तिक सुर आए थे।।
कह सिद्ध नमः दीक्षा ले ली.....
कह सिद्ध नमः दीक्षा ले ली, सुर नर जयकार लगाते हैं।
सोलह सौ हाथ तनू प्रभु का, अरु स्वर्ण वर्ण मन भाते हैं।।
तीरथ श्रावस्ती.....।।2।।

थी कार्तिक कृष्ण चतुर्थी जब, प्रभुवर को केवलज्ञान हुआ।
शुभ समवसरण रच गया, सभी ने दिव्यध्वनि का पान किया।।
बारहों सभा में बैठ भव्य.....
बारहों सभा में बैठ भव्य, प्रभु दिव्यध्वनि सुन हरषाएँ।
गणधर, मुनिगण आदिक संयुत, शुभ समवसरण को हम ध्याएं।।
तीरथ श्रावस्ती.....।।3।।

थी चैत्र शुक्ल षष्ठी संभव जिन, सम्मेदाचल से मोक्ष गए।
प्रभु का निर्वाणकल्याण मनाकर, हम उस तीरथ को प्रणमें।।
तीरथ का कण-कण परम पूज्य.....

तीरथ का कण-कण परम पूज्य, आगम में वर्णित गाथाएँ।
शाश्वत निर्वाणभूमि पावन, उसकी रज को हम सिर नाएँ।।
तीरथ श्रावस्ती.....।।4।।

तीरथ का वंदन करने से, आत्मा भी तीरथ बनती है।
अन्तर के भाव करे निर्मल, मन के सब कल्मष धुलती है।।
जब सम्यग्ज्ञान प्रगट होता.....
जब सम्यग्ज्ञान प्रगट होता, अंतर की कली खिल जाएगी।
'चंदनामती' है आश मेरी, आत्मा तीरथ बन जाएगी।।
तीरथ श्रावस्ती.....।।5।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–रोम-रोम से निकले.....

रोम-रोम से निकले माता नाम तुम्हारा! हाँ नाम तुम्हारा।।
ऐसा दो वरदान कि पाऊं, निश दिन दर्श तुम्हारा।। रोम.....।।टेक.।।

ज्ञानमती माता के पद में, जग ने तुमको पाया।
एक सूर्य सम पूर्व दिशा ने, मानो तुम्हें उगाया।।
फैला दो आलोक ज्ञान का, यही तुम्हारा नारा।। रोम.....।।1।।

श्री चारित्र चक्रवर्ती ने, जैसे मुनिपथ बतलाया।
उसी तरह क्वाँरी कन्याओं, को तुमने पथ दर्शाया।।
सदी बीसवीं लेकर आयी, ज्ञानमती जयकारा।। रोम.....।।2।।

श्री चारित्र चन्द्रिका माँ के, चरणों में वन्दन है।
युग की पहली ज्ञानमती, माता को अभिवन्दन है।।
अवध प्रान्त की अद्भुत मणि से, आलोकित जग सारा।। रोम.....।।3।।

सरस्वती की प्रतिमूर्ति, ब्राह्मी सम त्याग तुम्हारा।
तभी 'चन्दनामती' जगत ने, तुमको गुरु स्वीकारा।।
गणिनी ज्ञानमती माता के, चरणों नमन हमारा।। रोम.....।।4।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–फूलों सा चेहरा तेरा.....

इस युग की माँ शारदे, तू धर्म की प्राण है।
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।टेक.।।
महावीर प्रभु के शासन में अब तक,
कोई भी नारी न ऐसी हुई।
साहित्य लेखन करने की शक्ति,
तुझमें न जाने कैसे हुई।।
शास्त्र पुराणों में, भक्ति विधानों में, तेरा प्रथम नाम है विश्व में-2
कलियुग की माँ भारती, पूनो का तू चांद है,
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।
इस युग...।।1।।
तीर्थंकरों की जन्मभूमि का,
उत्थान माता तुमने किया।
हस्तिनापुरी में जंबूद्वीप को,
साकार माता तुमने किया।।
तीर्थ अयोध्या की, कीर्ति प्रसारित की, मस्तकाभिषेक आदिनाथ का हुआ-2
तू जग की वागीश्वरी, धरती का सम्मान है,
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।
इस युग...।।2।।
गणिनी शिरोमणि तेरी तपस्या,
का लाभ इस वसुधा को मिला।
चारित्र चक्री गुरु के सदृश ही,
''चंदना'' इक पुष्प जग में खिला।
पुष्प महकता है, चाँद चमकता है, ज्ञानमती माता के रूप में-2
युग युग तू जीती रहे, हम सबके अरमान हैं,
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।
इस युग...।।3।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–मनिहारों का रूप.....

शारद माता का रूप दिखाया,
ज्ञान का तूने अलख जगाया।। टेक.।।
दीक्षा लेती न थीं क्वांरी कन्या यहाँ,
बीसवीं सदि में तुमने प्रथम पद लिया।
ज्ञानमति नाम तब तूने पाया, ज्ञान का तूने अलख जगाया।
।।शारद...।।1।।
कोई साहित्य रचना न की साध्वी ने,
सैकड़ों ग्रन्थ अब रच दिए मात ने।
कुन्दकुन्द का पथ दरशाया, ज्ञान का तूने अलख जगाया।
।।शारद...।।2।।
जैन भूगोल रचना नहीं थी कहीं,
मात्र प्राचीन ग्रन्थों में वह थी कही।
जम्बूद्वीप का रूपक दिखाया, ज्ञान का तूने अलख जगाया।
।।शारद...।।3।।
जिनवरों की जनमभूमि विकसित न थीं,
प्रेरणा उनके उद्धार की माँ ने दी।
ऋषभ महावीर नाम गुंजाया, ज्ञान का तूने अलख जगाया।
।।शारद...।।4।।
जैन संस्कृति की तू इक धरोहर है मां,
युग युगों तक जिए तू कहें ''चन्दना''।
धरती चाहे सदा तेरी छाया, ज्ञान का तूने अलख जगाया।
।।शारद...।।5।।

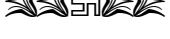

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–चलो मिल सब.....

चलो सब मिल यात्रा कर लो, तीर्थयात्रा का फल वर लो।
चौबिस तीर्थंकर की सोलह, जन्मभूमि नम लो।। चलो.।।
ऋषभ अजित अभिनंदन सुमती अरु अनंत जिनवर।
नगरि अयोध्या में जन्मे जो तीरथ है शाश्वत।।
अयोध्या को वंदन कर लो,
ऋषभदेव की जन्मभूमि का रूप नया लख लो।। चलो.।।1।।
श्रावस्ती में संभव कौशाम्बी में पद्मप्रभू।
वाराणसि में श्री सुपार्श्व पारस प्रभु को वंदूँ।।
चन्द्रपुरि तीरथ को नम लो,
जहाँ चन्द्रप्रभु जी जन्मे वह रज सिर पर धर लो।।चलो.।।2।।
पुष्पदन्त काकन्दी शीतल भद्दिलपुर जन्मे।
श्री श्रेयांसनाथ तीर्थंकर सिंहपुरी जन्मे।।
तीर्थ चम्पापुर को नम लो,
वासुपूज्य की पंचकल्याणक भूमि इसे समझो।।चलो.।।3।।
कम्पिल जी में विमलनाथ, प्रभु धर्म रतनपुरि में।
हस्तिनापुर में शांति कुंथु अर, तीर्थंकर जन्मे।।
चलो मिथिलापुरि को नम लो
मल्लिनाथ नमिनाथ जन्मभूमि वंदन कर लो।। चलो.।।4।।
राजगृही में मुनिसुव्रत नेमी शौरीपुर में।
कुण्डलपुर में चौबिसवें महावीर प्रभू जन्मे।।
तीर्थ से भवसागर तिर लो,
जिनवर जन्मभूमि दर्शन कर जन्म सफल कर लो।। चलो.।।5।।
गणिनी ज्ञानमती जी की, प्रेरणा मिली भक्तों।
सभी जन्मभूमी जिनवर की, जल्दी विकसित हों।।
पुण्य का कोष सभी भर लो,
तीर्थ वंदना से ही ''चन्दनामती'' सिद्धि वर लो।। चलो.।।6।।